



उत्तमा वृत्तिसु कृषिकर्मी

# चौरखी खेती

18 मार्च, 2020

वर्ष : 19 अंक : 12

प्रति अंक मूल्य : 4.50 रुपये

वार्षिक शुल्क : 50 रुपये

## सरसों की फसल में माहू कीट का प्रबंधन

डॉ. सुरेन्द्र कुमार यादव\*

सरसों की फसल को हानि पहुंचाने वाला माहू या मोयला एक अत्यन्त हानिकारक कीट है। इस कीट का प्रौढ़ अत्यन्त छोटा हल्के हरे-पीले रंग का होता है। इस कीट की लम्बाई 1.5 से 2.5 मि.मी. होती है। इस कीट का शरीर कोमल एवं लम्बा तथा गोलाकार होता है। इस कीट के ऊपरी भाग एवं शरीर के पिछले हिस्से पर एक जोड़ी नलिकाएं पाई जाती हैं। जिसे क्रोनिकल कहते हैं। इसी क्रोनिकल से यह कीट पत्तियों पर मधुस्त्राव करते हैं। माहू कीट के शिशु एवं प्रौढ़ के मुखांग चुभाने एवं चूसने वाले होते हैं। यह कीट पौधों के कोमल तनों, पत्तियों, फूलों एवं फलियों से रस चूसकर क्षतिग्रस्त कर देते हैं जिसके कारण फसल पीली एवं कमजोर हो जाती

है। इस कीट के कारण पत्तियां एवं तने का ऊपरी भाग अधिक प्रभावित होता है। मोयला कीट के प्रौढ़ एवं शिशु पत्तियों की निचली सतह एवं फूलों की टहनियों पर समूह में रह कर नुकसान पहुंचाते हैं। क्षतिग्रस्त पौधों पर फलियां नहीं लगती और यदि लगती हैं तो उनमें दाने पिचके एवं छोटे रह जाते हैं जिससे पैदावार में काफी कमी आ जाती है। यह कीट दिसम्बर से फरवरी तक बहुत सक्रिय रहता है। माहू का प्रबन्धन कैसे करें?

1. समय पर की गई फसल की बिजाई (10–15 अक्टूबर) पर माहू कीट का प्रकोप कम होता है।  
2. शुरुआत में जहां-जहां इस कीट के समुह दिखाई दे, उन टहनियों के प्रभावित हिस्सों को कीट सहित तोड़कर नष्ट कर दें।  
3. माहू के प्राकृतिक शत्रुओं का संरक्षण करना चाहिए।  
4. माहू या मोयला कीट की रोकथाम हेतु 24 किग्रा क्यूनालफॉस 1.5 प्रतिशत चूर्ण प्रति हैक्टेयर भुरके रुकेने के कारण कभी-कभी

अथवा 100 ग्राम थायोमेटिक्याम (25 डब्ल्यू. जी.) या 1200 मिली डाइमिथोएट 30 ई.सी. या 1 लीटर मोनोक्रोटोफास (1000 मिली) पानी में मिलाकर प्रति हैक्टर की दर से छिड़काव करें।

जब समन्वित कीट नियंत्रण के अन्तर्गत मोयला का नियंत्रण करना हो तो इस कीट की आर्थिक क्षति स्तर 10–15 प्रतिशत पौधों पर 26–28 मोयला प्रति 10 सेमी तने की ऊपरी शाखा पर पाये जाने पर बायोएजेन्ट वर्टीमिलियम लीकेनाई 250 ग्राम प्रति बीघा एवं सात दिन के बाद मिथाइल डेमेटान (25 ई.सी.) या डाईमेथोएट (30 ई.सी.) 125 मिली प्रति बीघा की दर से छिड़काव करें।

\*\*\*

\* सहायक आचार्य, कीट विज्ञान, विभाग, कृषि महाविद्यालय, बीकानेर

## जैविक कीटनाशकों से कीट व रोग नियंत्रण

**जयश्री झाला\***, **विमल सिंह राजपूत\*\***, **डॉ. कृष्ण गोपाल व्यास\*\*\***, **सुनील कुमार शर्मा\*\*\*\***

खेती में लगातार रसायनों के प्रयोगों से जमीन जहरीली हो चुकी है। पर्यावरण के साथ—साथ मानव स्वास्थ्य पर इनका बुरा प्रभाव पड़ रहा है। जहरीले व महंगे रासायनिक कीटनाशकों व रोग नियंत्रकों के कारण किसान कर्जे के बोझ में रहे हैं। इस दुष्यक्र से किसानों को बाहर निकालने के लिए जरूरी है कि वे खेती में जैविक विकल्पों को अपनाएं। जैविक कीटनाशक रोग एवं कीट को कम या खत्म करने के साथ—साथ जमीन की उर्वरता भी बढ़ाते हैं। यह हमारे अपने आसपास के प्राकृतिक संसाधनों द्वारा अपने हाथों से तैयार होते हैं। इनसे किसानों की बाजार पर निर्भरता भी खत्म होती है। किसानों के द्वारा प्रयोग किया कुछ सरल एवं जांचे परखे तरीकों का प्रयोग कर खेती में रोगों व कीटों से होने वाले नुकसान को काफी हद तक कम किया जा सकता है।

कीट व रोग नियंत्रण एवं प्रबंधन हेतु आवश्यक है कि

उत्तम गुणवत्ता वाले देसी बीजों व कम्पोस्ट खादों का प्रयोग करें। भूमि में जैविक तत्वों को बढ़ाकर केंचुए व सूक्ष्म जीवों के अनुकूल वातावरण बनायें। कीटों के प्राकृतिक दुश्मनों की रक्षा करें। कीट भक्षक जीव जैसे पक्षी, मेढ़क, सांप तथा मित्र कीटों के बसने की पारिसीतियां बनाएं व प्रकृति में विविधता बने रहने दें।

भूमि के एक हिस्से में ऐसी फसल उगाएं जो कीट भक्षक प्राणियों को आकर्षित करती है, अथवा दूर भगाती हो। इसके अतिरिक्त अपने खेतों का नियमित भ्रमण कर फसल का अवलोकन करते रहें ताकि समय रहते उपचार किया जा सके।

**विभिन्न रोगों व कीटों के नियंत्रण हेतु कुछ उपयोगी व सरल तरीके निम्नवत हैं :**

**नीम की पत्तियां :** एक एकड़ जमीन में छिड़काव के लिए 10–12 किलो पत्तियों का प्रयोग करें। इसका प्रयोग कवक जनित रोगों, व सुंडी, माहू इत्यादि हेतु सुंडी, माहू इत्यादि हेतु

अत्यन्त लाभकारी होता है। 10 लीटर घोल बनाने के लिए 1 किलो पत्तियों को रात भर पानी में भिगो दें। सूक्ष्म जीवों के अनुकूल अगले दिन सुबह पत्तियों को अच्छी तरह कूट कर या पीस कर पानी में मिलाकर पतले कपड़े से छान लें। शाम को छिड़काव से पहले इस रस में 10 ग्राम देसी साबुन घोल लें।

**नीम की गिरी :** नीम की गिरी का 20 लीटर घोल तैयार करने के लिए 1 किलो नीम के बीजों के छिलके है, अथवा दूर भगाती हो। उतारकर गिरी को अच्छी प्रकार से कूटें। ध्यान रहे कि इसका तेल न निकले। कूट हुई गिरी को एक पतले कपड़े में बांधकर रातभर 20 लीटर पानी में भिगो दें।

गिरी का लीटर घोल बनाने के लिए 15 से 30 मि.ली. तेल को 1 लीटर पानी में अच्छी तरह घोलकर इसमें 1 ग्राम देसी साबुन रा रीठे का घोल मिलाएं। एक एकड़ की फसल में 1 से 3 ली. तेल की आवश्यकता होती है। इस घोल का प्रयोग बनाने के तुरन्त बाद करें वरना तेल अलग होकर सतह पर फेलने लगता है जिससे यह घोल प्रभावी नहीं होता। नीम के तेल के छिड़काव से फसलों में कीट व कवक जनित बीमारियों को प्रभावी रूप से नियंत्रित किया जासकता है।

**नीम की खली :** कवक (फुफन्द) व मिट्टी जनित रोगों के लिए एक एकड़ खेत में 40 किलो नीम की खली को पानी व गौमूत्र में मिलाकर खेत की जुताई करने से पहले डालें ताकि यह अच्छी तरह मिट्टी में मिला जाए।

**नीम की खली का घोल :** एक एकड़ कीखड़ी फसल में 50 लीटर नीम की खली का घोल मिला कर रोगों के लिए एक एकड़ खेत में 50 ग्राम रीठे का घोल मिला दें। यह घोल दूध के समान सफेद होना चाहिए। इस घोल को कीट प्रयोग कवक जनित रोगों, व फुफंद नाशक के रूप में सुंडी, माहू इत्यादि हेतु प्रयोग किया जाता है।

\* विद्यावचास्पति छात्र, कीट विज्ञान विभाग, राजस्थान कृषि अनुसंधान संस्थान, दुर्गापुरा, \*\* विद्यावचास्पति छात्र, कीट विज्ञान विभाग, कृषि महाविद्यालय, बीकानेर \*\*\* विषय विशेषज्ञ, शस्य विज्ञान \*\*\*\* विषय विशेषज्ञ, कृषि प्रसार शिक्षा, कृषि विज्ञान केन्द्र पोकरण

## शेड नेट हाउस में टमाटर की खेती

पंकज कुमार कसवा\*, रमेश कुमार\*\*, ईजी.ए.के.सिंह\*\*\*

संरक्षित वातावरण में उगाई जाने वाली मुख्य एवं कीमती सब्जियों में टमाटर का विशेष महत्व है। एक वर्ष में टमाटर की तीन फसल ली जा सकती हैं लेकिन जहाँ गर्मियों में तापमान अधिक रहता है (पश्चिम राजस्थान) वहाँ मई—जून दो माह छोड़कर पूरे साल टमाटर की फसल ले सकते हैं। जिन क्षेत्रों आंधिया ज्यादा आती है उनमें पोली हाउस नष्ट हो जाते हैं वहाँ शेड नेट हाउस सही विकल्प है। नेट हाउस भी विभिन्न रंगों एवं सघनता के आते हैं। टमाटर की फसल के लिए लाल एवं सफेद रंग के नेट हाउस 50 प्रतिशत सघनता वाले उपयुक्त रहते हैं।

**जलवायु :** संरक्षित वातावरण में टमाटर की खेती वर्ष भर की जा सकती है। यह 21–23 डिग्री तापमान पर अच्छी वृद्धि करता है। अधिक तापमान से फल तथा उसके पोषक तत्वों पर विपरीत प्रभाव पड़ता है।

**उन्नत किस्में :** विश्वनाथ, देव, अभिनव, नवीन, डी.टी. -1, डी.आई.-7, ए.आर.टी.एच. -4

**बेड की तैयारी :** बेड की तैयारी करना एक विशेष कार्य है बेड के प्रध्युमन के लिए

फार्मलीन का प्रयोग करते हैं। बोने के लगभग 25 से 30 इसके लिए मिट्टी की गुड़ाई करते हैं फिर उस मिट्टी को जल से भर देते हैं। इस दौरान जल में फार्मलीन (01:10) के अनुपात में मिलते हैं। इस मिट्टी को 5 दिन के लिए पोलीथीन से ढक देते हैं। उसके बाद पोलिथीन हटाकर एक बार लगभग 100 लीटर जल प्रति वर्ग मीटर के हिसाब से मिट्टी को निष्कालित कर देते हैं। उपचारित मिट्टी में 2 सप्ताह बाद बुवाई कर सकते हैं।

**बेड का आकार :** बेड की ऊपर चौड़ाई—90 सेमी, बेड की निचले हिस्से की चौड़ाई—100 सेमी, दो बेड के बीच की दूरी—45 सेमी, बेड की ऊंचाई—40 सेमी रखते हैं। **ड्रिप लाइन बिछाना :** शेड नेट हाउस के लिए आवश्यक है कि क्यारियां पर सिंचाई ड्रिप पद्धति के द्वारा की जावे। इसके लिए 16 मिमी. की 60 सेमी इनलाइन लैटरल उपयोग की जाती है। लैटरल को बेड के बीचोबीच बिछाया जाता है। प्रत्येक ड्रिप का बहाव 4 लीटर प्रति घंटा होता है।

**पौध लगाना :** शेड नेट हाउस में टमाटर उत्पादन के लिए पौध को संरक्षित क्षेत्र में उगाया जाता है। पौध बीज

दिन बाद रोपाई योग्य हो जाती है। इस प्रकार 1000 वर्गमीटर के नेट हाउस में लगभग 2400 से 2600 पौधों को लगाया जाता है।

**टमाटर में सिंचाई प्रबंधन :** पोध रोपण के बाद जब तक पोधे ठीक से स्थापित नहीं हो जाते नमी की कमी नहीं होने चाहिए। सिंचाई को हम ड्रिप विधि से देते हैं। बुवाई से फूल आने तक 2.25 ली./वर्ग मीटर/दिन तथा उसके बाद अंतिम तुड़ाई तक 3–4 लीटर/वर्गमीटर/दिन सिंचाई की आवश्यकता होती है।

**खाद एवं उर्वरक :** शेड नेट हाउस में 20–25 टन प्रति हे. के अनुसार अच्छी सड़ी हुई गोबर की खाद मिलानी चाहिए। इसके बाद उर्वरक की मांग फसल के जीवन चक्र पर आधारित है। शेड नेट हाउस में नाइट्रोजन 1 ग्राम/लीटर, फास्फोरस आधा ग्राम प्रति लीटर तथा पोटाश 1 ग्राम /लीटर की दर से सिंचाई जल के साथ ड्रिप प्रणाली के द्वारा किया जाता है। फूल आने के समय इनकी मात्रा दो गुना तक बढ़ाया जा सकता है।

आमतौर पर गर्मी के मौसम में फर्टीगेशन 3–4 दिन के

अंतराल पर तथा सर्दी में 6–8 दिन के अंतराल पर किया जाता है। वैसे यह पूर्णतया क्षेत्र विशेष के मौसम, भूमि के प्रकार व फसल अवस्था पर निर्भर करता है।

**पादप सुरक्षा :** शेड नेट हाउस में किसी प्रकार के कीटों व रोगों का प्रकोप कम होता है लेकिन कभी—कभी विषाणु रोग (टी.एम.वी.) का यदि कुछ पौधों पर प्रकोप हो तो उन्हें अविलंब उखाड़ कर नष्ट कर देना चाहिए। अन्यथा यह कटाई व छंटाई यंत्रों के साथ दूसरे पौधों पर फैल सकता है। इसकी रोकथाम हेतु यह भी आवश्यक है कि प्रत्येक दिन कटाई—छंटाई में प्रयोग होने वाले यंत्रों को भी रोगाणु रहित किया जाना चाहिए। फलों की तुड़ाई व उपज : बड़े आकार के फलों को एक—एक करके नकू (पुजी बंसलग) के साथ ही तोड़ा जाता है तथा तुड़ाई केंची या तेज धार वाले चाकू से पकने की (लाल रंग) अवस्था पर ही तोड़ा जाता है। आमतौर पर एक अच्छे वातावरण में शेड नेट हाउस से 100–150 टन टमाटर की उपज प्रति हैक्टर की दर से प्राप्त की जा सकती है।



\* वरिष्ठ अनुसंधान अध्ययेता, सहआचार्य (कृषि अभियांत्रिकी) सुनियोजित खेती विकास केन्द्र, कृषि अनुसंधान केन्द्र, बीकानेर

के घोल को छिड़काव करें। 150 लीटर घोल बनाने के लिए 5 किलोग्राम नीम की खली को 50 लीटर पानी में एक पतले कपड़े में पोटली बनाकर रातभर के लिए भिगो दें। अगले दिन इसे मसलकर व छानकर तैयार हुए इस घोल को प्रयोग में ला सकते हैं। यह बहुत ही प्रभावकारी कीट व रोग नियंत्रक है।

**डैकण (बकायन) :** नीम की जगह डैकण को भी (बकायन) प्रयोग में ला सकते हैं। एक एकड़ के लिए डैकण की 5 से 6 किलोग्राम पत्तियों की आवश्यकता होती है। छिड़काव पत्तियों की दोनों सतहों पर करें। नीम या डैकण पर आधारित कीटनाशकों का प्रयोग हमेशा सूर्यस्त के बाद करना चाहिए क्योंकि सूर्य की अल्ट्रावायलेट किरणों के कारण इसके तत्व नष्ट होने का खतरा होता है। साथ ही शत्रु कीट भी शाम को ही निकलते हैं। जिससे इनको नष्ट किया जासकता है डैकण के तेल, पत्तियों, गिरी व खल के प्रयोग व छिड़काव की विधि भी नीम है।

**करंज (पोंगम) :** करंज एक फलीदार पेड़ है जो मैदानी इलाकों में पाया जाता है। इसके बीजों से तेल मिलता है जो कि रोशनी के लिए लहसुन की रोकथाम के लिए लहसुन इसके लिए 1 किलो लहसुन जलाने के काम भी आता है। इसकीखल को खाद व पत्तियों को हरी खाद के रूप में प्रयोग किया जाता है। इसका घोल बनाने के लिए पत्तियां, गिरी, खल व तेल का प्रयोग करते हैं। यह खाने में विषाक्त व उपयोगी कीट प्रतिरोधक व फुफंदी नाशक है। करंज के तेल, पत्तियों, गिरी व खल का घोल बनाने के लिए मात्रा व छिड़काव की विधि भी नीम की तरह ही है।

#### गोमूत्र :

गोमूत्र कीटनाशक के साथ-साथ नाइट्रोजन, फोस्फोरस व पोटाश का प्रमुख स्रोत भी है। इसका ज्यादातर प्रयोग फल, सब्जी तथा बेलवाली फसलों की कीड़ों व बीमारियों से बचाने के लिए छिड़काव के रूप में किया जाता है। गोमूत्र को 5 से 10 गुना पानी के साथ मिलाकर छिड़कने से माहू सैनिक कीट व शुत्र कीट मर जाते हैं।

#### लहसुन :

मिर्च, प्याज आदि कीपौध में लगने वाले कीड़ों की रोकथाम के लिए लहसुन का प्रयोग किया जाता है। इसके लिए 1 किलो लहसुन तथा 10 ग्राम देसी साबुन को कूटकर 5 ली. पानी के साथ मिला देते हैं व फिर पानी को दानकर इसका छिड़काव इसका घोल बनाने के लिए करते हैं।

**चुलू व सरसों की खली :** यह बहुत ही प्रभावकारी फुफन्दी नियंत्रक है इस हेतु एक एकड़ में 40 किलो चुलू व सरसों की खली को बुवाई से पहले खेतों में डालें।

**खट्टा मट्ठा :** यह बहुत ही प्रभावकारी फुफन्द नियंत्रक है। एक सप्ताह पुराने 2 लीटर खट्टे मट्ठे को 30 लीटर पानी में घोल कर इसका खड़ी फसल पर छिड़काव करना चाहिए। एक एकड़ खेत में 6 लीटर खट्टा मट्ठा पर्याप्त होता है।

#### तम्बाकू व नमक :

सब्जियों की फसल में किसी भी कीट व रोग की रोकथाम के लिए 100 ग्राम तम्बाकू व 100 ग्राम नमक को 5 ली. पानी में मिलाकर छिड़कें। इसको और प्रभावी बनाने के लिए 20 ग्राम साबुन का घोल तथा 20 ग्राम

बुझा चुना मिलाएं।

#### शरीफा तथा पपीता :

शरीफा व पपीता प्रभाव कीट व रोगनाशक हैं। यह सुंडी को बढ़ने नहीं देते। इसके एक किलोग्राम बीज या तीन किलोग्राम पत्तियों व फलों के चूर्ण को 20 ली. पानी में मिलाएं व छानकर छिड़क दें।

#### मिट्टी का तेल :

रागी (कोंदा) व सांवा (झंगोरा) की फसल पर जमीन में लगने वाले कीड़ों के लिए मिट्टी के तेल में भूसा मिलाकर बारिश से पहले या तुरंत बाद जमीन में इसका छिड़काव करें। इससे सभी कीड़े मर जाते हैं। धान की फसल में सिंचाई के स्रोत पर 2 ली. प्रति एकड़ की दर से मिट्टी का तेल डालने से भी कीड़े मर जाते हैं।

#### बीमार पौधों का उचित निस्तारण :

रोगी पौधों एवं उनकी लियों आदि के उचित निस्तारण हेतु उन्हें सावधानी से तुरन्त निकाल दें साथ ही रोगी पौधे को उखाड़कर जला दें। इससे समय पर फसल में फुफन्दी, वाइरस व बैक्टीरिया जनित रोगों को

## गौमूत्र आधारित कीटनाशक

शंकरलाल, डॉ. दीपक चतुर्वेदी, डॉ. रणवीर, डॉ. हरजिन्द्र सिंह\*

मुर्गी पालन एक ऐसा व्यवसाय है, जो किसानों के लिए आय का कृषि एवं पशुपालन के साथ-साथ अतिरिक्त साधन बन सकता है। भारत में कुपोषण एवं गरीबी की समस्या को दूर करने के लिए पारम्परिक मुर्गी पालन अथवा घर के पिछवाड़े मुर्गी पालन प्राचीन काल से प्रचलित है। इसमें प्रायः 5-20 मुर्गियों का छोटा सा समूह एक परिवार के द्वारा पाला जाता है, जो घर के पिछवाड़े में छोटे स्तर पर मुर्गियों को घरेलू श्रम और सीनीय उपलब्ध दाना-पानी का उपयोग करते हुए बिना किसी विशेष आर्थिक व्यय के पालन पोषण करना ही बैकयार्ड (घर के पीछे) मुर्गीपालन कहलाता है। मुर्गीपालन आर्थिक रूप से पिछड़े हुए लोगों को आर्थिक स्वावलम्बन दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका आद करता है। सामान्यतया द्विकाजी नस्ल की मुर्गियों को बैकयार्ड कुक्कुट पालन के लिए उपयोग में लिया जाता है। इसमें मुर्गियां घर के चारों

तरफ स्वतः विचरण करते अतिरिक्त आमदनी हो जाती हुए अपना खाना पीना खुद है।

**खोजती हैं। जिस कारण नस्ल का चुनाव :**

मुर्गी पालन की इस विधि में किसी विशेष घर एवं पारम्परिक कुक्कुट पालन तकनीकी की आवश्यकता नहीं होती। मुर्गियों को प्रायः बांस की टोकरी अथवा कार्ड बोर्ड के बक्से में रात को बहारी जानवरों से बचाने के लिए रखा जाता है ये अधिकतर रसोई अवशिष्ट, दूटे हुए अनाज के दाने, कीड़े-मकोड़ों आदि को खाकर ही अपने भोजन की आवश्यकता की पूर्ति करती है। इन्हें सिर्फ कुछ मात्रा में अलग से दाना—पानी देने की आवश्यकता होती है एवं अंडा देने में मार्बल के छोटे-छोटे टुकड़े प्रतिदिन 5-7 ग्राम/पक्षी देना चाहिए ताकि अंडे का बाहरी कवच मजबूत एवं सख्त हो। इस प्रकार के रखरखाव एवं खाने—पीने पर कोई खास खर्च नहीं आता। साथ ही ग्रामीण परिवारों के लिए उच्च गुणवत्ता का प्रोटीन स्रोत उपलब्ध हो जाता है एवं कुछ मात्रा में मांस व अंडा बेच लेने से परिवार को

उड़ीसा की प्रमुख नस्ल है। इन मुर्गियों का व्यवहार बहुत ही ज्ञागङ्गालू होता है इसलिए इस नस्ल मनोरंजन (लड़ाई) के लिए अधिक प्रसिद्ध है मुर्गों का वजन 4-5 किलोग्राम तथा मुर्गियों का वजन 3-4 किलोग्राम होता है। इस नस्ल के मुर्गे—मुर्गियों की गर्दन और पैर लंबे होते हैं तथा बाल चमकीले होते हैं। मुर्गियों की अंडे देने की क्षमता काफी कम होती है।

**कड़कनाथ :** कड़कनाथ मुर्गों की उत्पत्ति मध्यप्रदेश के झाबुआ जिले से हुई एवं वर्तमान में इस पक्षी ने झाबुआ जिले की पहचान पुरे भारतवर्ष में बना दी है सामान्यतया कड़कनाथ मुर्गों को कालामासी के नाम से भी जाना जाता है क्योंकि इसका मांस, चौंच, कलंगी, जुबान, टांगे, नाखुन, चमड़ी इत्यादि काली होती है जो कि मिलैनिन पिगमेंट की अधिकता के कारण होता है। इस नस्ल के मांस में प्रोटीन 25 प्रतिशत की मात्रा अधिक होती है जो अन्य नस्ल के मांस की अपेक्षा अधिक है।

\* कृषि विज्ञान केन्द्र, जैसलमेर

पेज 5 का शेष .....

इसका मांस स्वादिष्ट व बाकी नस्ल के अपेक्षा लंबे आसानी से पचने वाला होता होते हैं। इस नस्ल की है इसकी इसी विशेषता के कारण बाजार में इसकी मांग बहुत अधिक है एवं गंग अधिक होने के कारण इस का विक्रय भी काफी ऊँची दरों पर किया जाता है। यह मुर्गिया प्रतिवर्ष लगभग 80 इंडे देती है। इस नस्ल की प्रमुख किस्में जैट ब्लेक, पेन्सिल्ड और गोल्डन है।

**ग्राम प्रिया :** ग्रामप्रिया नस्ल को अखिल भारतीय समन्वय अनुसंधान परियोजना के तहत हैदराबाद में विकसित किया गया है। इनका वजन 12 हफ्तों में 1.5 से 2 किलो होता है। इनके मीट का प्रयोग तंदूरी चिकन बनाने में अधिक किया जाता है। इस की अंडा उत्पादन क्षमता अन्य देशी मुर्गियों से अधिक है यह साल में औसतन 180–210 तक अंडे देती है। इनके अण्डों का रंग भूरा होता है और उसका वजन 57 से 60 ग्राम होता है।

**चिटागोंग :** यह नस्ल मुर्गियों में सबसे ऊँची नस्ल मानी जाती है। इसे मलय चिकन के नाम से भी जाना जाता है। इस मुर्ग 2.5 फीट तक लंबे तथा इनका वजन 4.5–5 किलोग्राम तक होता है। इनकी गर्दन और पैर

बाकी नस्ल के अपेक्षा लंबे होते हैं। इस नस्ल की प्रतिवर्ष अण्डे अंडा उत्पादन क्षमता लगभग 70–120 अण्डे है।

**श्रीनिधि :** इस प्रजाति की भी मुर्गियां दोहरी उपयोगिता वाली होती हैं यह लगभग 210 से 230 अंडे तक देती है। इनका वजन 2.5 किलोग्राम से 5 किलोग्राम तक होता है जो कि ग्रामीण मुर्गियों से काफी ज्यादा होता है और इन से अधिक मात्रा में मांस और अंडे दोनों के जरिए अधिक मुनाफा कमाया जा सकता है। इस प्रजाति की मुर्गियों का विकास काफी तेजी से होता है।

**वनराजा :** यह मांस एवं अंडा उत्पादन की दृष्टि से द्विप्रयोजनी नस्ल है। इस नस्ल की मुर्गियों की अंडा उत्पादन क्षमता भी अन्य देशी नस्ल की मुर्गियों से अधिक है। यह एक वर्ष में लगभग 100–120 तक अंडे दे देती है एवं 4.5 माह की आयु में ही अंडे देना शुरू कर देती है और इसका वजन भी 2.5 – 5 किलो तक जाता है।

**पंजाब भूरा :** यह पंजाब एवं हरियाणा की प्रमुख नस्ल है। इस के पंखों का रंग भूरा होता है। नर का शरीर भार

2–2.5 एवं मादा का शरीर में आने वाली मुर्गी की नस्लों भार 1.5–2 किलोग्राम तक के पांव एवं पंख मजबूत होने होता है एवं इस का वार्षिक चाहिए।

**अंडा उत्पादन क्षमता 80 से 100 अंडे प्रतिवर्ष है।**

**बैकयार्ड मुर्गीपालन के लाभ :**

1. इसके लिए बहुत कम की क्षमता भी होनी चाहिए। जमीन, श्रम एवं पूँजी की आवश्यकता होती है।

2. यह गांव के लोगों को अंडे का बाहरी आवरण फसल की बर्बादी या अन्य मजबूत होना चाहिए।

आपात स्थितियों में 3. इनके अंडे का आकार अच्छा होने के साथ-साथ आवश्यकता होती है।

4. इनके मांस में वसा की अतिरिक्त आय प्रदान कर जीने की सुरक्षा देता है।

5. इनमें रोग एवं बीमारियों के प्रतिरोध क क्षमता होनी प्रोटीन कुपोषण से मुक्ति चाहिए।

6. इनका वजन 8–10 अदा करता है। सप्ताह में लगभग 1.5

4. यह अवशिष्ट पदार्थों जैसे किलोग्राम तक आ जाना रसोईघर का अवशिष्ट, कीड़े-मकोड़े को उच्च प्रोटीन वाले अंडे एवं मांस से या इससे कम होनी चाहिए।

7. इनकी मृत्यु दर 5 प्रतिशत बदलकर खाद्य सुरक्षा एवं पर्यावरण सुरक्षा में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है।

5. मुर्गी के विष्टा से भूमि अगर इस तरह से किसान मुर्गी पालन करना चाहे तो इनमें से किसी भी प्रजाति की मुर्गियों का पालन कर सकते हैं एवं घर के पीछे मुर्गियों को पालन कर अच्छा लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

6. यह ग्रामीण परिवेश में पिछड़े लोगों को स्वरोजगार प्रदान करता है।

**बैकयार्ड मुर्गीपालन के लिए निम्न विशेषताएं होनी चाहिए।**

1. बैकयार्ड मुर्गीपालन में कम





## निदेशक की कलम से .....

सृष्टि की शुरुआत के बाद जब मानव ने पहली बार भोजन की टोह ली तो उसे कव—मून पर निर्वाह करना पड़ां परन्तु धीरे—धीरे विकास के साथ मानव ने खेती अपना दी। एक तथ्य के अनुसार विश्व में खेती की शुरुआत और वैज्ञानिक विकास का प्रारम्भ महिलाओं ने ही किया। पुरुष शिकार और भोजन की खोज में निकल जाते थे और स्त्रियों सीनीय वनस्पतियों के बीजों को इकट्ठा कर उनकी खेती द्वारा खाय, पशु राबत, पशु चारा, रेशा, ईंधन आदि तैयार करने लगी। समय के साथ—साथ कृषि के क्षेत्र में महिलाओं का योगदान निरन्तर बढ़ता गया। सन्तुलित पोषाहार की निरन्तर व्यवस्था होती गई। कुपोषण के समाधान में गृहवाटिका ने अपना महत्वपूर्ण रोल निभाया है। मनुष्य के शरीर की वृद्धि, विकास, ऊर्जा, निरोगता एवं संचालन के लिये भोजन की आवश्यकता होती हैं भोजन में उचित मात्रा में प्रोटीन, वसा, शर्करा, विटामिन, खनिज लवण आदि का होना आवश्यक है। अगर शरीर को उपरोक्त पदार्थों की उचित मात्रा उपलब्ध नहीं होती है तो इससे शरीर में कई प्रकार की बीमारियां पैदा हो जाती हैं। अतः जरूरीर है कि हमेसा संतुलित मात्रा में ही पौष्टिक तत्वों का उपयोग करना चाहिये।

इसके लिये मोटे तौर पर एक स्वस्थ पुरुष को दैनिक संतुलित आहार में अनाज 450 ग्राम, दाल 80 ग्राम, पत्तीवाली सब्जी—125 ग्राम, अन्य सब्जी—75 ग्राम, फल 30 ग्राम, दूध 200 मिली, चर्बी 40 ग्राम तथा शक्कर—गुड़ का 40 ग्राम सेवन करना चाहिये। प्रदेश में कुपोषण एवं अन्य पोषण एक गम्भीर समस्या है। इस विकट समस्या का मुख्य कारण पौष्टिक पदार्थों के उत्पादन में कमी तथा पोषाहर संबंधी अज्ञानता के साथ—साथ उपलब्ध खाद्यान्नों के उचित उपयोग संबंधी सही जानकारी का न होना भी है। सब्जियों व फलों की पूर्ति घरों में या जहां भी थोड़ी भूमि उपलब्ध है। गृह वाटिका लगाकर की जा सकती है। इससे कुपोषण की समस्या को काफी हद तक दूर किया जा सकता है।

— डॉ. एस. के. शर्मा

## इस माह के कृषि कार्य

### खेतों में—

गेहूँ व जौ में दाने की दूषियता अवस्था एवं दाना पकते समय सिंचाई करें। कण्डवाग्रस्त बालियों को निकाले। सरसों की फलियां चटखने से पहले कटाई करें। खरपतवारों को बीज बनने से पहले खेत से निकालकर जला दें।

मोयला/चौपा/माहू के नियंत्रण के लिए डाइमिथएट मिथाइल डिमिटोन एक लीटर प्रति हैक्टेयर के हिसाब से प्रयोग करें।

चने में फली छेदक कीड़े की रोकथाम हेतु आखरी हथियार के रूप में एण्डोक्साकार्ब 200 मिली. /हैक्टेया की दरे से छिड़काव करें। बसन्तकालीन गन्ना के लिए

तीन—तीन आंख वाले करीब 40—45 हजार टुकड़े प्रति हैक्टेयर की दर से बुवाई करें।

हरे चारे के लिए बाजरा, ग्वार व चंवला की बराबर मात्रा में बीज की बुवाई करें।

जायद मूँग के लिए खेत तैयार कर के के — 851 एवं

एसएमएल—668 का प्रति हैक्टेयर 12—20 किलो बीज को क्रमशः फफूंदीनाशी, राइजोबियम व पी.एस.

बी. कल्वर से उपचारित करके बोयें। बुवाई के समय 65 किलो डीएपी व 10 किलो यूरिया प्रति

हैक्टेयर की दर से प्रयोग करें। मिट्टी का परीक्षण के आधार पर अन्य तत्वों का भी प्रयोग करें।

जायद मूँगफली की झुमका किरमें

डीएच 86, एसबी 11, टीजी 26 और जी जी — 2 या टी जी 37 ए किस्मों

की प्रति हैक्टेयर 100 — 120 किलोग्राम प्रमाणित बीज बोयें। खेत खलिहानों में चूहों की रोकथाम करें।

### बगीचों में—

आंवले के पौधे में उम्र के हिसाब से खाद उर्वरक दे।

आम के थांवलों में गुड़ाई करें, सिंचाई करें और मिलीबग की

रोकथाम करें।

नींबू वर्गीय पौधों में कीट व व्याधी की रोकथाम करें। जरूरत हो तो सूक्ष्म तत्वों का छिड़काव करें।

### बाढ़ी में—

प्याज में हरी लट की रोकथाम करें टमाटर की खड़ी फसल में 30

किलो नत्रजन प्रति हैक्टेयर की दर से छिड़कें।

कद्दुवर्गीय सब्जी के बीजों को बुवाई से पूर्व 24 घंटे पानी में भिगाये फिर टाट में बांधकर 24 घंटे रखे फिर प्रति किलो बीज को 2 ग्राम कार्बोण्डेलिम से उपचारित करें।

### पशुपालन:-

पषुओं में खुरपका — मुहंपका व भेड़ों में फड़किया रोग का टीका लगावें।

### बीजोत्पादन:-

बीज के लिए उगाई गई फसलों को सतरकता से निरीक्षण करते रहे और विजातीय तथा रोगग्रस्त पौधों को निकाल कर जला दे। जायद फसलों की बुवाई 15 मार्च तक करें।